

भारतीय और यूरोपीय विज्ञान



भारतीय मानस में एक बात घर कर चुकी है कि जो विज्ञान तकनीकी भारत में आई वह सब पश्चिम से आई। यह बात भारत के प्रधानमंत्री से लेकर चतुर्थ श्रेणी के एक कर्मचारी, सब में मौजूद है! प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4SHNWeIBJQIZKOW8/edit?usp=sharing

बिना अर्थव्यवस्था के समाज का संचार नहीं हो सकता। अर्थव्यवस्था चलाने के लिए उद्योग आवश्यक हैं। उद्योगों के लिए तकनीक आवश्यक है और तकनीक बिना विज्ञान के संभव नहीं! यह बात इतिहास नहीं बदल पाया कि भारत आर्थिक रूप से बहुत शक्तिशाली देश था जिसका अर्थ है कि भारत का विज्ञान

और तकनीक भी बहुत उन्नत रही होगी! आज भारत देश की मानसिकता खासकर पढ़े लिखे वर्ग में, यह हो चुकी है कि भारत तकनीकी रूप से एक पिछड़ा हुआ देश था। एक आम इंसान से अधिक फर्क शायद न पड़े परंतु देश को चलाने वाले भी यही मानते हैं और हर स्कूल-कॉलेज में यही पढ़ाया जाता है कि अमुक विज्ञान बाहर से आया। कभी भी भारत के विज्ञान और तकनीक की चर्चा हमें देखने और सुनने को नहीं मिलती जिसने इस देश को सोने की चिड़िया बना कर रखा था!

8 जुलाई 2005 में मनमोहन सिंह को डॉक्टर की उपाधि दी गई, ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में। वहाँ उन्होंने एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने इस बात को कहा कि यह भारतीयों का सौभाग्य है कि अंग्रेज़ भारत में आए क्योंकि अगर वे न आते तो भारत कभी भी विज्ञान, तकनीक, कानून व्यवस्था, अर्थशास्त्र, पोस्ट, रेल और सिविल सेवाएँ न सीख पाता! इस बात पर भाई राजीव जी ने 250 पृष्ठों का एक पत्र या कहें पुस्तक प्रधानमंत्री कार्यालय में भेजी जिसका जवाब बस इतना आया कि आगे की कार्यवाही के लिए आपका पत्र भेज दिया गया है! पत्र में लिखा था कि हमें शर्म आती है यह कहते हुए कि आप जैसा व्यक्ति भारत का प्रधानमंत्री है जिसे भारत का ही इतिहास नहीं मालूम! इसके साथ उन्होंने 249 पन्नों का एक दस्तावेज भेजा था जिसमें भारत के विज्ञान और तकनीक के प्रमाण थे! मनमोहन सिंह के इस भाषण पर ब्रिटेन के दो अखबार - Guardian तथा London Times ने यह टिप्पणी लिखी थी कि आज मनमोहन सिंह ने विंस्टन चर्चिल की उस भविष्यवाणी को सिद्ध कर दिया जो उन्होंने ब्रिटिश संसद में सन 1945 में कही थी। विंस्टन चर्चिल भारत को स्वतंत्र करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने संसद में कहा था कि यह देश आज़ाद होने लायक ही नहीं है! इस देश में पहले से ही इतने मानसिक गुलाम हैं जो अपने ही लोगों का जीना मुश्किल कर देंगे तो ऐसे में इस देश को आज़ाद करने से क्या लाभ? इसे गुलाम ही रखा जाए!

(<http://ibnlive.in.com/blogs/brijeshkalappa/2992/63900/decoding-winston-churchills-hatred-for-india.html>) इस पर ब्रिटेन के उन दो

अखबारों का कहना था कि भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह आज अपने भाषण के माध्यम से चर्चिल के इन वाक्यों को सत्य सिद्ध करते हैं!

वास्तव में भारत में मानसिक गुलामी एक ही दिन में नहीं आई। इसको एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। माननीय जगदीश चन्द्र बोस जी भारत के उन बहुत कम लोगों में से थे जिन्हें यूरोप के लोगों ने नोबल पुरस्कार के लायक समझा जबकि उनका अनुसन्धान बहुत ही विलक्षण था! उन्होंने इस तथ्य का पता लगाया था कि पौधों में भी जीवन होता है। उन्होंने अपने अनुसन्धान के ऊपर दो पुस्तकें भी लिखी थीं जिनमें उन्होंने लिखा था कि उन्होंने एक ही किस्म के पौधों को दो अलग अलग जगह रख दिया। इन दोनों जगहों पर उन्होंने एक ही जैसी परिस्थिति रखी जैसे धूप, पानी, खाद इत्यादि। वो एक जगह पर पौधों के पास जाकर उनसे बहुत अच्छी बातें करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे जबकि दूसरी तरफ वाले पौधों के पास जाकर उन्हें जमकर कोसते थे और गालियाँ देते थे। 6 महीनों के बाद प्रशंसा वाले पौधे दुगुने हो गए और गाली खाने वाले पौधे मर गए! यही हाल अब इस देश का हो रहा है! 300 सालों तक अंग्रेज़ भारत और भारतीयों को कोसते रहे और उन्हें निकम्मा, नकारा कहते रहे। हर जगह भारतीयों को हीन समझते रहे और गैर बराबरी का शिकार बनाते रहे! भारतीय संस्कृति का उपहास और अपमान करते रहे और इसी के लिए मकौले ने एक शिक्षा कानून बनाया जिसका पालन 1840 से लेकर अब तक हो रहा है! बहुत दुःख होता है यह देख कर कि किस तरह अपने ही लोग अपनी ही संस्कृति और सभ्यता का वैसा ही मजाक उड़ाते हैं जैसे अंग्रेज़ उड़ाया करते थे! अब यह हीनता हम सब के खून में बस चुकी है कि जो भारतीयता से जुड़ा है उसमें कुछ नहीं! हमारे देश की हालत भी अब वही होने जा रही है जो उन पौधों की हुई थी जो श्री बोस जी से रोज़ गालियाँ खाते थे!

भारत कितना पुराना है? दुनिया के समाज शास्त्री और वैज्ञानिक अब इस बात को मानने लगे हैं कि भारत कुछ भी नहीं तो एक करोड़ वर्ष से भी अधिक पुराना है जिसके प्रमाण मौजूद हैं! प्रमाण देख कर पश्चिमी इतिहासकार न तो उसे मानते हैं और न ही उसे नकार पाते हैं। मानते इसीलिए नहीं कि उनका

खुद का अस्तित्व 4500-5000 वर्ष पुराना नहीं है। यूरोप का सबसे पुराना देश रोम था जो अब वर्तमान में इटली है जिसकी उम्र 4500 वर्ष है, इसीलिए यह बात उनके गले से नहीं उतरती कि कोई देश उनसे भी पुराना हो सकता है और वो भारत की उम्र 5000 वर्ष आंकते हैं! नासा ने यह स्वीकार किया है कि भारत के दक्षिण में बना सेतु समुद्रम जो श्री राम ने लंका जाने के लिए नल और नील की सहायता से बनवाया था, उसकी उम्र 5 लाख 13 हजार वर्ष पुरानी है जो अभी भी नष्ट नहीं हुआ है! इसका अर्थ है कि भारत कुछ भी नहीं तो 5,13,000 वर्ष पहले तो था ही! यह सोचने वाली बात है कि एक पुल लाखों वर्षों से अपनी आकृति में ज्यों का त्यों खड़ा है, तो कुछ तो तकनीक रही ही होगी जिससे उस पुल का निर्माण किया गया हो! भारत जैसा देश इतने करोड़ों वर्षों से है तो कोई तो सामाजिक ढांचा, तकनीक, विज्ञान तो रहा ही होगा जिसके सहारे यह देश अब तक है!

विज्ञान का सिद्धांत सभी के लिए समान होता है। तकनीक, विज्ञान के आधार पर जीवन में अनुकूलता लाने के लिए होती है। क्या आपको पता है सीमेंट की आयु क्या होती है? सीमेंट की एक दीवार में अधिकतम 5 वर्षों में दरार पैदा हो जाती है। इसके खंड खंड टूटने की आयु 100 वर्ष है अर्थात् यदि आप सीमेंट की दीवार की मरम्मत न कराएं तो वह अगले 100 वर्षों में मिट्टी हो जाएगी! वहीं चूने की आयु कम से कम 250 से लेकर 2000-2500 वर्ष तक होती है! भारत में 150 वर्ष पहले तक मकान और किले चूने के बनते थे और जो लोग थोड़े गरीब होते थे वो मिट्टी के मकान बनाते थे।

चूना बनाने के लिए चूने के पत्थर को, जिसको लाइम स्टोन कहते हैं उसके टुकड़े कर, एक गड्ढे में डाला जाता था। इस पत्थर के ऊपर एक और भारी गोल पत्थर लगाया जाता था और बैल की सहायता से उसे पीसा जाता था। इसमें ऊपर से दूध डाला जाता था जिससे चूने में मजबूती आती थी। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उस समय में भारत में कितना दूध होता होगा जो पीने के बाद ऐसे उपयोग में लाया जाता था। 1850 में अंग्रेजों ने एक कानून बना कर चूना बनाना निषेध कर दिया! वे चूने के पत्थर को जहाज़ से ले जाते

थे और इंग्लैंड से सीमेंट बना कर भारत में बेचते थे। धीरे धीरे चूने का चलन कम होता गया और सीमेंट आसानी से मिलने लगा जिसकी वजह से चूना बनाने वाले बर्बाद हो गए! सीमेंट के लिए चाहिए बिजली, बिजली के लिए पानी और कोयला, कोयले और पानी के लिए चाहिए प्रकृति से छेड़ छाड़ और प्रकृति से छेड़ छाड़ का नतीजा लाता है भूकंप और बाढ़! इतनी तबाही के बाद भी आपको जो मिलता है वो 5 साल ही चल पाता है! यह है पश्चिमी तकनीक। वहीं भारत का चूना धीरे-धीरे बनता है और मेहनत लगती है परंतु प्रकृति के किसी भी नियम का उल्लंघन नहीं होता और कम से कम 250 वर्ष चलता है! तो बताइए कौन सा उत्पाद quality या high-tech है? जिस पत्थर से चूना बनता है, उसी से सीमेंट भी बनता है। अगर सीमेंट सचमुच हाई टेक उत्पाद होता तो हमारे ऋषि मुनि सीमेंट ही न बना लेते! क्यों उन्होंने चूना बनाने की तकनीक हमें दी?

अब mixer-grinder को लीजिए। हाई टेक है, तेज है और अंतिम उद्देश्य है पिसाई। यह है पश्चिमी तकनीक। अब भारत की ओर चलते हैं। यहाँ है सिल-बट्टा और अंतिम उद्देश्य है फिर वही, पिसाई। जब सिल-बट्टे पर पिसाई होती है तो आपका cholesterol जलता है, जो हृदयाघात या heart attack का प्रमुख कारण है। यही नहीं, माताओं के गर्भाशय की इससे मालिश होती है जिसकी वजह से उन्हें सिजेरियन ऑपरेशन नहीं करवाना पड़ता! उधर mixer-grinder के लिए चाहिए बिजली और बिजली के लिए आप करेंगे प्रकृति से छेड़ छाड़। फिर क्रिया और प्रतिक्रिया के सिद्धांत के अनुसार आपको प्रकृति से मार पड़ेगी जैसी उत्तराखंड में अभी पड़ी! यही नहीं जब तक आप mixer-grinder से पिसाई कर रहे हैं तब तक आप कुछ नहीं कर रहे होते। इसी शारीरिक श्रम के अभाव में आपको हृदयाघात सहना पड़ता है, माताओं को शिशु जनने में भयंकर कष्ट उठाना पड़ता है और फिर इन बीमारियों को ठीक करने के लिए हजारों रुपये की दवाइयाँ खानी पड़ती हैं! यानी शरीर से भी गए और धन से भी! यही है पश्चिमी तकनीक। एक गर्म देश होने के कारण, प्राकृतिक रूप से भारतीयों के शरीर में वसा (fat) अधिक बनता है जो शरीर में इकट्ठा होता है। इसको निरंतर खर्च करने की आवश्यकता हम सभी भारतीयों को रहती है। यही कारण है कि हमारे

देश में अधिकतर कार्यों में श्रम की प्रधानता है क्योंकि इसकी हमें आवश्यकता है। तो आप ही बताएँ, जो हमें करना चाहिए वो न करके उसका उल्टा यदि हम कर रहे हैं तो क्या परिणाम होंगे और उन्हें कौन झेलेगा?

वाशिंग पाउडर, पश्चिमी तकनीक है। मिट्टी, प्राकृतिक है तथा भारतीय पद्धति है। भारत में कपड़े धोने के लिए हजारों वर्षों से मिट्टी का प्रयोग होता आया है। मिट्टी से धुलाई के लिए कपड़ों पर मिट्टी लगा कर उन्हें एक दिन तक रख दिया जाता था। उसके बाद उन्हें अगले दिन खंगाल और पटक कर धो लिया जाता था। मिट्टी भी वही काम करती है जो वाशिंग पाउडर करता है यानी surface tension को खत्म कर देती है। इसका दूसरा विकल्प निकला Oil cake जिसको सिनौला भी कहते हैं, स्वदेशी है। इन दोनों तकनीक में पानी बहुत कम खर्च होता है, वाशिंग पाउडर की तुलना में। न सिर्फ इतना, बल्कि ये जहरीले भी नहीं हैं। मिट्टी से कपड़े धोना एक sustainable process है। मिट्टी वापिस पानी में चली जाती है और आप उसे पुनः उपयोग में ला पाते हैं। इस स्वदेशी पद्धति से सफाई पाउडर से ज्यादा अच्छी होती है, प्रकृति का नुकसान नहीं होता, धन नहीं व्यय होता तथा शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है। पाउडर के लिए आप हजारों रुपए की पहले मशीन खरीदते हैं जो बिजली खाती है, पाउडर एक जहरीला पदार्थ है जो कभी नष्ट नहीं होता और कैंसर पैदा करता है, शारीरिक श्रम का अभाव होता है जिससे बीमारियाँ लगती हैं। पाउडर भूमिगत जल में मिल जाता है और नष्ट नहीं होता क्योंकि यह एक inorganic compound है। वापिस फिर हम इसे निकाल कर फिल्टर से छान कर पीते हैं और समझते हैं कि हम शुद्ध पानी पी रहे हैं जबकि यह पाउडर तब भी पानी में रह जाता है और कैंसर पैदा करता है! आगे बताने की जरूरत नहीं क्योंकि अब तक आप शायद समझ चुके होंगे कि कौन सी तकनीक हमारे लिए है!

अगर आप यूरोपीय और भारतीय तकनीक को देखें तो आप एक अंतर पाएँगे। पश्चिमी तकनीक में गति की प्रधानता होती है और भारतीय तकनीक में स्वास्थ्य की प्रधानता होती है। भारतीय तकनीक प्रकृति को ध्यान में रख कर होती है और धीमी होती है। क्यों धीमी होती है? क्योंकि प्रकृति भी धीमी होती

है, इसीलिए उसके साथ तालमेल बैठा कर होती है! आप यदि एक जेट प्लेन के पहिये की तुलना पृथ्वी के घूमने से करें तो आप समझ जाएँगे जबकि उसी पहिये का इस्तेमाल भारत में बैल गाड़ी के लिए होता था। यह वही भारत है जिसने दुनिया की सबसे बड़ी खोज, पहिया, दुनिया को दिया! यह भारत चाहता तो जेट भी विकसित कर सकता था!

एक बार भाई राजीव जी ने एक किसान को हिदायत दी कि वह अपनी बैलगाड़ी में मोटर लगवा ले ताकि उसका काम आसान हो जाए। किसान ने पूछा कि इससे क्या होगा? राजीव जी ने कहा कि इससे वह एक दिन में कई बार शहर आ जा सकेगा। किसान बोला उससे क्या होगा? राजीव भाई बोले उससे तुम्हारे पास ज्यादा पैसा आयेगा और तुम बहुत कुछ अपने परिवार के लिए खरीद सकोगे जैसे टीवी, फ्रिज, पलंग आदि। किसान ने पूछा उसके बाद? जवाब मिला कि उससे तुम्हें सुख और शांति मिलेगी! किसान ने तपाक से उत्तर दिया कि मेरे पास तो अभी भी सुख और शांति है फिर तुम मेरा क्यों दिमाग खराब करते हो? मेरे और कई जन्म होने बाकी हैं और मैं हर जन्म में आराम से मजा लूँगा। पश्चिम का कोई व्यक्ति इस किसान की तरह नहीं सोच सकता जिसके दो कारण हैं - पहला, वो लोग पुनर्जन्म नाम की किसी चीज़ में विश्वास नहीं करते और दूसरा, उनके जीवन का अंतिम उद्देश्य भोग है इसीलिए उनमें धैर्य नहीं है। जितना मिल जाए और जितनी जल्दी मिल जाए वाली सोच है जिसका परिणाम है पूंजीवाद! यही कारण है कि उनकी हर तकनीक में आपको गति मिलेगी और एक ही उद्देश्य रहेगा सुविधा, कम से कम समय में चाहे उसके लिए कुछ भी करना पड़े! प्रकृति का विनाश भी! यह उनकी सोच है, हम क्यों इसे अपनाये बैठे हैं?

तकनीक कभी भी नयी या पुरानी नहीं होती। यह कभी out dated नहीं होती। तकनीक होती है उपयोग में लाने के लिए और कोई भी चीज़ तभी उपयोग में लायी जाती है, जब उसकी आवश्यकता हो! जिसकी आवश्यकता नहीं, वह हमारे किसी काम की नहीं और यही बात तकनीक पर लागू होती है! हम देखते हैं कि वास्तविक जीवन में समस्याएं हमारी तकनीक से बहुत जल्दी ठीक हो जाती हैं

जबकि नक़ल की हुई तकनीक से वह और बढ़ जाती है। ऐसा ही एक उदाहरण है मोटर पम्प। यह उपकरण कुछ ही घंटों में जमीन के नीचे का पानी खींच कर बाहर निकाल देता है। इसके लिए हम 150-500 फीट नीचे तक खुदाई करवाते हैं। जितनी जल्दी इससे पानी बाहर निकाला जाता है, क्या उतनी ही गति से वापिस जमीन में पानी डाला जा सकता है? फिर होता यह है जमीन के नीचे जल स्तर गिर जाता है और सरकार उस जगह को Dark Zone घोषित कर देती है। फिर वर्ल्ड बैंक वाले आते हैं और जगह का निरीक्षण करते हैं। फिर उनका सुझाव होता है कि जल स्तर को पुनः स्थापित करने के लिए आप लोग मोटर पम्प बंद करें और तालाब खुदवाएं। उसके लिए हम पैसा देते हैं, हमसे अपमानजनक शर्तों पर कर्ज़ ले लो! यह काम तो हम पहले भी कर सकते थे तालाब और नहर खुदवा कर!

यूरोप में तापमान बहुत कम रहता है। उन्होंने इसके नियंत्रण के लिए फ्रिज बनाया जिसमें वे मुख्यतः दवाइयाँ या पैकेट में खाना रखते हैं क्योंकि उसमें से CFC गैस निकलती है जो खाने को जहरीला बना देती है। उनकी मजबूरी यह है कि उनके यहाँ ताज़ी सब्जियाँ और फल नहीं होते, लेकिन हमारे यहाँ कौन सी मजबूरी है? भारत में हर सुबह आपको ताज़ा सब्जी और फल मिल जाते हैं, पीने के पानी के लिए हमारे देश के कारीगर मटका बना सकते हैं, हम ताज़ी रोटी बनाना जानते हैं, ताज़ा खाना पका कर खा सकते हैं, दिन में तीन बार ताज़ा खाना खा सकते हैं; फिर हमें फ्रिज की जरूरत क्यों पड़ती है? क्यों हम खाने को जहरीला बना कर खाते हैं? वहाँ के लोग फ्रिज का पानी पीते हैं जिससे उन्हें कब्ज की शिकायत रहती है। दो-दो तीन-तीन दिन हो जाते हैं, पेट साफ़ नहीं होता। इसकी वजह से मुँह से दुर्गन्ध आती है तो वे mouth freshner छिड़कते हैं। उन्हें शौचालय में घंटों बैठना पड़ता है इसीलिए उन्होंने cupboard बनाये। हम गर्म देश के लोग हैं, प्राकृतिक रूप से ही हमारा शौच दुविधाजनक नहीं होता इसीलिए मुँह से दुर्गन्ध भी नहीं होती, फिर किसलिए हम उनकी नक़ल करते हैं?

जिन देशों में सूर्य का प्रकाश नहीं होता वहाँ संक्रमण फैलने का खतरा हमेशा बना रहता है। वहाँ viral तथा bacterial संक्रमण का खतरा अधिक होता है। इसीलिए यूरोप और अमरीका में लोगों का mass vaccination होता है ताकि संक्रमण सारे शहर या गाँव में फैलकर महामारी की स्थिति उत्पन्न न करे! यह उनकी जरूरत है, इसीलिए उन्होंने mass vaccination को विकसित किया। भारत जैसे देशों में जहाँ साल के 350 दिन सूर्य की तेज़ किरणें पड़ती हैं, वहाँ वायरस पैदा नहीं हो पाते। अकेले सूर्य के ताप से 350 तरह के संक्रमण खत्म हो जाते हैं! एक संक्रमण यूरोप में फैला जिसका नाम है Hepatitis। यह एक वायरस होता है। उनकी देखा देखी भारत सरकार ने यहाँ भी mass vaccination शुरू कर दी, जबकि भारत में यह वायरस न आया और न आ सकता है वरना अब तक कोई न कोई ऐसा केस जरूर मिलता भारत में। इस टीके में कुछ नहीं होता बस वही वायरस शिशु के शरीर में डाल दिया जाता है जो उसके शरीर में antibodies उत्पन्न करता है और इस इंतज़ार में रहता है कि कब उसके जैसा वायरस बाहर से हमला करेगा! सवाल यह है कि अगर बाहर से हमला नहीं हुआ तो क्या अंदर बैठा वायरस चुप बैठेगा? वो चुप नहीं बैठेगा, वो कुछ न कुछ खुराफात अवश्य करेगा और गंभीर रूप से बीमार कर देगा! यही होता है जब किसी तकनीक की अंधाधुंध नक़ल की जाती है। ऐसी ही कहानी है पोलियो की भी!

हमारे देश में जनसंख्या अधिक है। हमें ऐसी तकनीक चाहिए जिससे हमारे देश में रोज़गार खत्म होने के बजाय बढ़ें! उदाहरण के तौर पर यदि हम करोड़ों रुपये खर्च करके एक ऐसी मशीन लगाते हैं जो करोड़ों मीट्रिक टन कपड़ा एक दिन में बनाती हो तो सोचिए कितने लोगों के हाथों से रोज़गार छिन जाएगा! कहने को तो आपने नयी तकनीक लगायी लेकिन वो किस काम की जिसमें देश के लोग गरीब हो जाएँ? तकनीक कभी हाई टेक नहीं होती, वो appropriate होती है! हमें बड़ी मशीन बनाने के बजाय आवश्यकता है कि ऐसी छोटी छोटी मशीनें बनायें जिससे एक दिन में करोड़ों मीट्रिक टन कपड़ा तो तैयार हो लेकिन सबकी सहभागिता के साथ। इससे क्या होगा? इससे हमारे लोगों को रोज़गार मिलेगा जिससे उनकी खरीदने की क्षमता बढ़ेगी, क्षमता बढ़ने से मांग बढ़ेगी, मांग

बढ़ने से पैदावार बढ़ेगी और पैदावार बढ़ने से और नए रोज़गार लोगों को मिलेंगे! बड़ी तकनीक यूरोप जैसे देशों के लिए है जहाँ जनसंख्या की भारी कमी है जैसे डेनमार्क, फ़्रांस, न्यूजीलैंड आदि।

“तकनीक कभी नयी, पुरानी, हाई टेक, लो टेक नहीं होती। तकनीक हमेशा appropriate होती है। यह हमें तय करना है कि हमारे लिए कौन सी तकनीक appropriate है।”

- श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी

वंदे मातरम...